Vishnu
V.S.J. College
Rajnagar

व्यवस्थित बनाम प्रादेशिक भूगोल
(Systematic vs Regional Geography)

व्यवस्थित (सामान्य) बनाम प्रादेशिक (विशेष) भूगोल में द्वैतवाद अध्ययन - विधियों में अंतर के कारण है। सामान्य नियमों के आधार पर सम्पूर्ण भूतल के व्यवस्थित अध्ययन को व्यवस्थित भूगोल और प्रदेशों के अध्ययन को प्रादेशिक भूगोल कहते हैं। दोनों में द्वैतता अतिप्राचीन काल से चली आ रही है। अतः Burgess ने इसे ऐतिहासिक द्वैतवाद कहा है। ग्रीक और बौद्ध कालों में ग्रह, ऋतु - परिवर्तन आदि के व्यवस्थित अध्ययन के साथ ही मिस्र भारत आदि का प्रादेशिक अध्ययन भी होता था। पर हार्टशोर्न के अनुसार इस द्वैतता को स्पष्ट करने का प्रथम प्रयास 1650 ई० में 'बर्नहार्ड वारेनियस' ने किया। इन्होंने भौगोलिक अध्ययन को सामान्य और विशिष्ट दो भागों में बाँट दिया। दोनों में अंतरसम्बंध भी बतलाया।

- व्यवस्थित (systematic) भूगोल → इसमें पृथ्वी को एक इकाई मानकर सभी भौतिक - मानवीय तत्वों का सामान्य नियमों के आधार पर अध्ययन किया जाता है। भूतल पर व्याप्त विभिन्नताओं के बावजूद पृथ्वी को एक संग्रहित इकाई माना जाता है। 'हम्बोल्ट' का 'Kosmos' ग्रंथ भी systematic विधि पर ही बल देता है। — "Systematic geography deals with the whole world as a unit" — Mazid Husain

PAGE NO :
DATE :

क्रमबद्ध विधि को Topological विधि भी कहते है, क्योंकि इसमें भौगोलिक तत्वों को Topics में बाँटकर उनका सापेक्षिक अध्ययन सम्पूर्ण पृथ्वी के सन्दर्भ में किया जाता है, जैसे पृथ्वी को थल, जल, नभ मण्डलों में बाँटकर अध्ययन। फिर प्रत्येक मण्डल को विभिन्न Topics (जैसे थल मंडल को पर्वत, पठार, मैदान) में बाँटकर उसका विश्वस्तरीय क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। अतः क्रमबद्ध भूगोल को "वर्गीकरण" भूगोल भी कहते है। इसमें जैविक - अजैविक तत्वों को वर्गीकृत कर उनके विश्वव्यापी लक्षणों का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है।

- प्रादेशिक (Regional/Special) भूगोल → 18 वीं शदी के अन्तिम चरण में Classical period के बाद प्रादेशिक संकल्पना का काफी विकास हुआ। इसमें भूतल को प्रदेशों में बाँटकर प्रत्येक प्रदेश के अजैविक - जैविक तत्वों का विश्लेषण, संश्लेषण कर अन्य प्रदेशों से तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

"Regional Geography is essentially synthetic and deals with unique situations and their peculiarities" - Mazid Husain.

रिटर के 'Erdkunde' अर्डकुण्डे ग्रंथ में प्रादेशिक वर्णन है। मानव भूगोलवेत्ताओं ने अधिकांशतः प्रादेशिक अध्ययन पर बल दिया। ब्लाँश, हार्टशोर्न आदि भी इसके समर्थक थे।

PAGE NO :
DATE :

— संतुलित प्रादेशिक अध्ययन के लाभ —

(i) यह प्रदेश के भौगोलिक गुणों का संगठित रूप प्रस्तुत करता है।

(ii) उस विशिष्ट इकाई में विशिष्ट कार्यों एवं स्वलक्षणों के कारण इसका पृथक भौगोलिक व्यक्तित्व होता है।

(iii) वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण सरलता और विश्वसनीयता के साथ होता है।

(iv) प्रदेश के सर्वप्रमुख तत्व को पहचान कर मनुष्य उसके अनुकूल कार्यकर लाभान्वित हो सकता है।

(v) Regional Planning में प्रादेशिक अध्ययन से काफी सुविधा मिलती है।

अतः प्रादेशिक अध्ययन भी महत्वपूर्ण है। "Regional Geography is the core of geography — Dickinson.

— व्यवस्थित एवं प्रादेशिक भूगोल में समन्वय —

दोनों में ऐक्यता भूगोल के हित में है। दोनों के पक्षधर एक-दूसरे के महत्व को स्वीकार करते हैं। व्यवस्थित भूगोल के समर्थक 'पेंक' ने भी प्रादेशिक अध्ययन को सराहा है। वैसे ही प्रादेशिक भूगोलवेत्ता हेटनर के अनुसार व्यवस्थित भूगोल के 'सामान्य नियम' प्रादेशिक अध्ययन में सहायक है। प्रादेशिक भूगोल शाखा है तो व्यवस्थित भूगोल वृक्ष की जड़ है। एक के बिना दूसरा अधूरा है। अतः दोनों भूगोल वृक्ष की अन्तःपूरक शाखाएँ है। दोनों विधियों द्वारा अध्ययन से भूगोल का सम्यक तथा व्यापक अध्ययन संभव है।

Scanned with CamScanner